1.11 कबीर के बीजक में शामिल प्रमुख काव्यरूप (साखी, सबद, रमैनी इत्यादि)

कबीर की सभी कविताओं का संकलन 'बीजक' कहलाता है। बीजक के अंतर्गत कई तरह के काव्यरूप दिखाई पड़ते हैं जिनमें सबसे प्रमुख हैं- 'साखी', 'सबद' और 'रमैनी'। अन्य काव्यरूपों में 'बसंत', 'कहरा', 'चांचर', 'हिन्डोला' तथा 'विप्रमतीसी' आदि की भी चर्चा मिलती है।

1. साखी

कबीर ही नहीं, अधिकांश संत कवियों ने जिस काव्यरूप का सर्वाधिक प्रयोग किया है, वह साखी है। कबीर ने कितनी साखियाँ लिखीं, इसकी निश्चित संख्या बताना कठिन है क्योंकि विभिन्न इतिहासकारों ने अलग-अलग मात्रा में साखियों की खोज की है। डॉ. पारसनाथ तिवारी ने अपने अनुसंधान में पाया कि कबीर के नाम से लगभग 4500 साखियाँ मिलती हैं हालांकि इनमें से 744 ही प्रामाणिक हैं। डॉ. श्यामसुंदर दास ने कबीर ग्रंथावली में 809 साखियों को संकलित किया है।

साखी की परंपरा कबीर से ही शुरु नहीं हुई। कण्हपा जैसे सिद्धों और गोरखनाथ जैसे नाथ योगियों की रचनाओं में भी 'साखी' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'नामदेव जी की साखी' भी काफी प्रसिद्ध है। कबीर ने पहले से चले आ रहे इस काव्यरूप को अत्यंत लोकप्रिय बना दिया। परिणामत: परवर्ती संत कवियों ने भी इस काव्यरूप को अपनाया।

'साखी' शब्द संस्कृत के 'साक्षी' शब्द का तद्भव रूप है। साक्षी का अर्थ है 'गवाह' अर्थात् वह व्यक्ति जिसने अपनी आँखों से तथ्य को देखा हो। कबीर यूँ भी 'आँखिन देखी' को 'कागद लेखी' से ज़्यादा महत्व देते रहे हैं। शंकराचार्य ने भी अद्वैत वेदांत में 'साक्षी' की धारणा प्रस्तुत की है जिसका अर्थ इससे मिलता-जुलता है। इन आधारों पर कहा जा सकता है कि साखी वह काव्यरूप है जिसमें कबीर ने आत्म-अनुभूत तथ्यों या ज्ञान का वर्णन किया है। कबीर खुद साखी के संबंध में कहते हैं-

"साखी आँखी ज्ञान की, समुझि देखु मन माँहि,
बिनु साखी संसार का, झगरा छूटत नाहिं।"

साखियों की विषय-वस्तु हमेशा एक सी नहीं रही है। सामान्यत: यह एक उपदेश प्रधान काव्यरूप है जिसमें मनुष्य को नैतिक, आध्यात्मिक, वैराग्यपूर्ण तथा आडंबररहित जीवन जीने की प्रेरणा दी गई है। कबीर ग्रंथावली के अधिकांश अंग जैसे- सुमिरन को अंग, विरह को अंग, गुरुदेव को अंग, परचा को अंग, माया को अंग इत्यादि साखियों में ही रचे गए हैं। कुछ प्रमुख उदाहरण इस प्रकार हैं-

"सतगुर हमसूँ रीझकर, कह्या एक परसंग,
बरस्या बादर प्रेम का, भीज गया सब अंग।"

(गुरुदेव को अंग)

"लूटि सकै तो लूटियौ, राम नाम है लूटि,
पीछैं ही पछिताहुगे, यहु तन जैहे छूटि।"

(सुमिरन को अंग)

"सुखिया सब संसार है, खावै अरु सोवै,
दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै।"

(विरह को अंग)

"जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहिं,
प्रेम गली अति साँकरी, जा मैं दो न समाहिं।"

(परचा को अंग)